श्री स्वरूप जयंती

तर्ज– तेरे कांटो से भी ... ...

ए वसंत दी बहार, लीता सत्गुरु ने अवतार ।
जो भी करना चाहे कर लो दीदार , बैठे हैं मेरी सरकार ।। टेक।।

जो–जो आए शरण, छूटा जन्म मरण।
कृपा गुरां दी जो हो गई, बन गए तारन – तरन।।

एं ता शक्ति है अपार , गुरां तो जावां मैं बलिहार।
जो भी करना चाहे कर लो दीदार , बैठे हैं मेरी सरकार।।

सोहना मुखड़ा नुरानी , जिस दा कोई नहीं सानी ।
मिलया जिसनूं नज़ारा , सुधरी ओदी ज़िंदगानी।।

चाहे अवगुन लख हजार, बख़्शे पल विच बख्शनहार ।
जो भी करना चाहे कर लो दीदार , बैठे हैं मेरी सरकार।।

आया सन् जो चौरासी, प्रगटे आ अविनाशी।
सत्नाम जपा के , कट्टी यम वाली फांसी।।

पिरो के सुर्त शब्द इक तार , सुनाई अनहद की झंकार ।
जो भी करना चाहे कर लो दीदार , बैठे हैं मेरी सरकार।।

कहंदा " दास " निमाना, ओही जीव सयाना।
जिसने गुरां नाल प्यार पाके , सिखया निभाना।

झूठा छड के ए संसार, मिलाई सत्गुरु दे नाल तार ।
जो भी करना चाहे कर लो दीदार , बैठे हैं मेरी सरकार।।

संगता बसंत नूं आईयां , बधाईयां लै लो भर– भर झोलियां।
माघ शुधि अज पंचमी आई , प्रभु दयाल घर बाजी शहनाई।
टेरी च खुशियाँ छाईयां ,वधाईयां लै लो ... ...

मन मोहन ने मन हर लीता ,श्रद्धा नाल जिस दर्शन कीता।
हो गईयां दूर बलाईयां ,वधाईयां लै लो ... ...

खुशियाँ दे अज बाजे वजदे , विच संगता दे सत्गुरु सजदे ।
सब दीयां आसां पुजाईयां, वधाईयां लै लो ... ...

माता राधे दी गोद सुहानी , जिस विच खेले सत्गुरु जानी।
दिल दीयां तप्तां बुझाईयां , वधाईयां लै लो ... ...

" दासनदास " क्या आख सुनाए , कुल वासुदेव दे भाग जगाए।
द्वारे ते वजियां शहनाईयां, वधाईयां लै लो ... ...

तर्ज़– बंदा बंदगी बग़ैर किसे कम दा नईयों ... ...

मैं कुरबान तैथों नंगली दे रहन वालेया।
दाता भक्तां दे दुखड़े न सहन वालेया।। टेक।।

कलूकाल विच आयों संत रूप धर के ,
सरहद ते पंजाब , सिंध, यू. पी. तार के ।।
सोहने चन तों वधीक भावां भैण वालेया, मै ... ...

फिर के दूर– दूर देश कीता सच्चा उपदेश
राजयोग दित्त दस, अते कटे न क्लेश।
अमृत वाणी दे खुलासे शब्द कहन वालेया, मैं ... ...

बेड़ा जदों सी चनाब विच रुढ़ चलेया,
अखीं देखया मैं हथ देके तुसां ठलेया।
भारी विपदा च दाता सुध लैन वालेया, मैं ... ...

तेरे प्रेम ताईं जदों चोरां आके लुटेया,
गड्डा भरेया कपास दा सी जुआ टुटेया
बन के थानेदार घोड़े उत्ते बैन वालेया, मैं ... ...

" दासनदास " तेरी महिमा भला गावे किस तरह,
तेरी करनियां दा भेद भला पावे किस तरह।
आके ह्रदय विच बस बांके नयन वालेया, मैं ... ...

सन्त रूप धर आए ,सत्गुरु सन्त रूप धर आए ।। टेक।।

नर –नारी चरणी लागे , पूर्व भाग जिन्हों के जागे।
चरणीं सीस निवाए ,सत्गुरु सन्त रूप धर आए।।

सुन्दर रूप स्वरूप गुरु जी , महिमा अलख – अनूप गुरु जी
मोसे कही न जाए, सत्गुरु सन्त रूप धर आए।।

कोटि जन्म के पाप नसा कर , अंदर अजपा – जाप जपा कर ।
सिमरन युक्ति बताए , सत्गुरु सन्त रूप धर आए।।

संत रूप धर प्रगटे स्वामी , दिल की जानो अन्तर्यामी।
तुझसे कौन छुपाए ,सत्गुरु सन्त रूप धर आए।।

" दासनदास " यह अर्ज गुज़ारी , सत्गुरु तैथो जां बलिहारी
तुझ सा और न भाए , सत्गुरु सन्त रूप धर आए।।

विच नंगली दे मिलन वधाईयां।। टेक।।

टेरी दे विच अवतार लया जो भक्तां मन खुशियाँ छाईयां।
बाल रूप विच देवी मंदिर जाके कलां दिखाईयाँ।।
अति सुंदर मन मोहन रूपा, सखियां देखन आईयां।
चांदी दा बनया पगूड़ा रेशमी डोरा पाईयां।।

विच नंगली दे मंगल छाया, संगता झुलावन आईयां।
" दासनदास " गुरुकृपा से कट गईयां यम दियां फाईयां।।

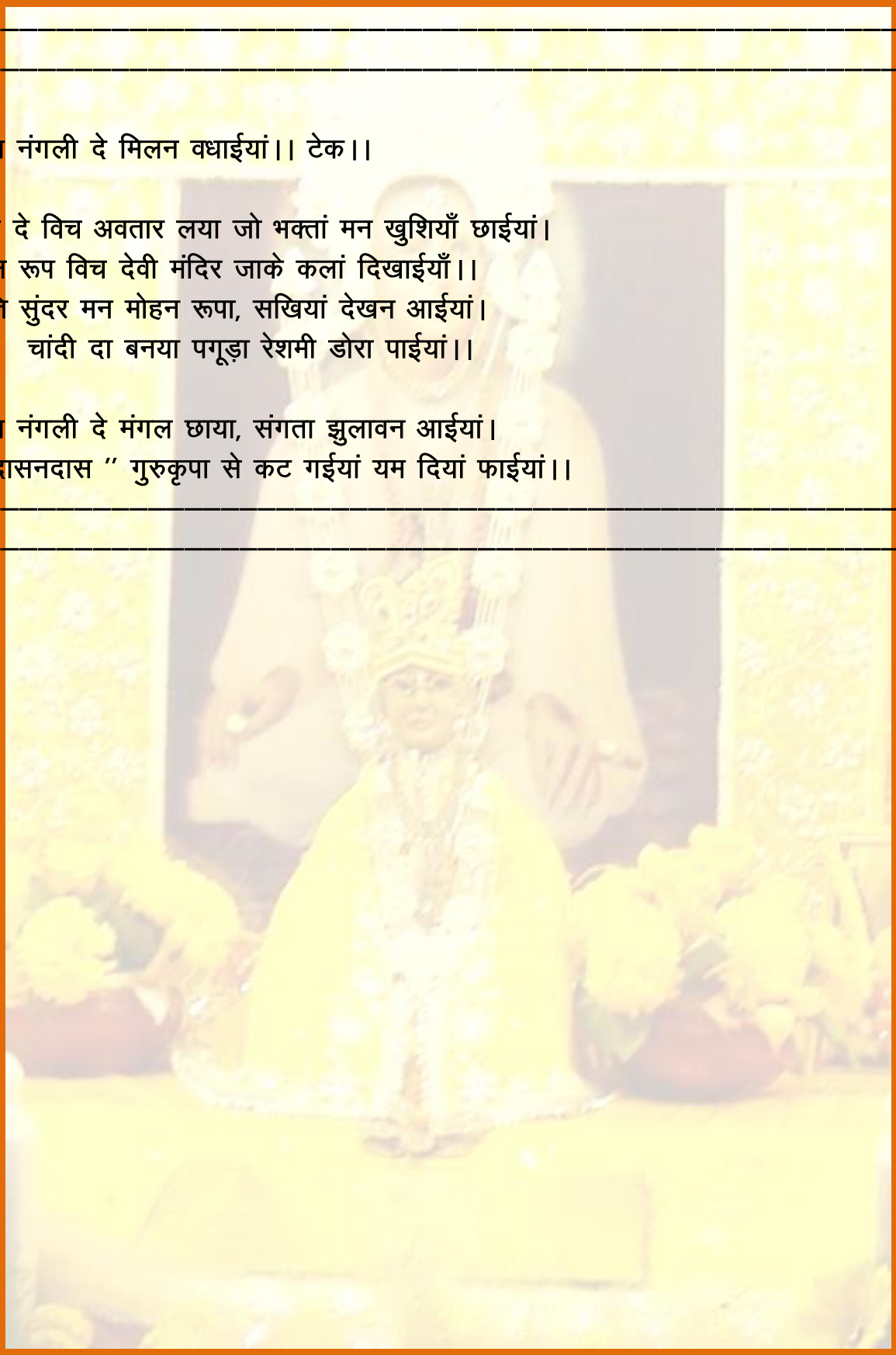

तर्ज– छुप–छुप खड़े हो ज़रूर ... ...

रुत है सुहानी ते वसंत दा त्योहार है।
अज सानूं दित्ता साडे गुरां ने दीदार है।। टेक।।

बदली बहार सरकार जग आ गए।
टेरी शहर उत्ते बदल रहमतां दे छा गए।।
वासुदेव कुल नूं बधाई बार –बार है, अज ... ...

हिन्दू , सिक्ख , पठान, मुगल दौड़े आए सी।
देवन्दे बधाईयां नच– नच गीत गाए सी।।
कहन्दे इस घर आया जग दा आधार है, अज ... ...

टेरी विच डाके अत्ते धाड़े मुक गए सी।
ज़ालिमां दे जुल्म दर्शन कर मुक गए सी ।।
कोई कहन्दा वली कोई कहन्दा अवतार है, अज ... ...

जिस डिटा मुख ओ तां ऐसे दा ही हो गया।
चातरी चालाकी मुख देख ही खो गया।।
घर घाट त्याग आया सच्चे दरबार है, अज ... ...

'दासनदास' उत्ते होई मेहर दी निगाह है।
इक निगाह नाल कट दित्ता यम फाह है।।
मेरी गल छड़ो ए तां जग तारनहार है ,अज ... ...

कवित्त– उंगली के इशारे पर जिसके ये सारा जहां चलता है।
वो माता की उंगली पकड़े कहता माँ – माँ चलता है।।
धन थी वोह उंगली प्यारी कि जिसके सहारे प्रभु।
टेरी जी की गलियाँ में करता हूँ– हां चलता है।।

तर्ज़– लेके पहला– पहला प्यार

है बसंत की बहार घर–घर हो रही जय – जयकार।
अज टेरी में संत अवतार हो गया।। टेक।।

फूल पत्ते डाली–डाली क्यों मुस्कुरा रहे, प्रीतम का आना सुनके खुशियाँ मना रहे।
बुल – बुल करे गुलों से प्यार, कोयल गावे गला पसार,
उसका दिल भी था बाग़–ो बहार हो गया, है बसन्त ... ...

माघ शुदी पंचमी और दिन था बसन्त का , होया दीदार आके सत्गुरु सन्त का।
हुआ कुदरती चमकार , जो जो देखे नर और नार ,
ओही चरणों में आके बलिहार हो गया, है बसन्त ... ...

मुखड़ा सी भोला ते आप भोला करतार सी, नैन मतवाले सोहणी मीठी गुफ़्तार सी।
जिस दम बोले मेरी सरकार, मानो अलख पुरुष साकार ,
जिसकी बोली से जग का प्यार हो गया, है बसन्त ... ...

माता श्री राधेरानी खुशियाँ मना रही, मेरे दीनानाथ ताईं गोदी बिठला रही।
ए तां कहन्दा " दासनदास " जो कुछ था माता के पास,
ऐसे छलिये तो सब कुछ निसार हो गया, है बसन्त ... ...

दोहा– पात पात और डाल ने बदला अपना रूप।
घूंघट खोले सभी ने देखें यहीं स्वरूप।।

तर्ज़– इस रेशमी ... ...

है आई बसंत बहार इस बहार के सदके ।
है लिया गुरां अवतार इस अवतार के सदके।। टेक।।
उस दिन था शुक्रवार शुक्रवार के सदके, है आई ... ...

था मालन हार बनाया हार पहनाने के लिए।
उस हार के बहाने दर्शन पाने के लिए।।
उस हार के फूलों के इक इक तार के सदक़े, है आई ... .

कुछ आकर देन बधाइयाँ घर प्रभु दयाल लाला के ।
कर दर्शन खुशी मनावन ऐसे दीनदयाला के ।।
लख वारी सदक़े जावन प्राणाधार के सदक़े, है आई ... ...

है थित पंचमी पाँचों को वश करने के लिए।
बिछड़े हुए भक्तों के दुख हरने के लिए।।
इस संकट मोचन मनमोहन सरकार के सदक़े, है आई ... ...

कहे " दासनदास " सुनाता गुणगाता ही रहूँ।
यह शुभ वसंत मनाने नंगली आता ही रहूँ।।
क्या वारूं कुछ नहीं मेरा , इस दिलदार के सदक़े, है आई ... ...

तर्ज़– मन दी मसीती विच आया सोहणा पीर जी ... ...

लख – लख बधाई भैण भावां तेरा वीर नी।
क्या सोहणा वीर नी ए रब्ब दी जागीर नी।। टेक।।
बच्चे अत्ते बुढ्ढे क्या देवियाँ क्या माईयां।
घर प्रभुदयाल जी दे देन वधाईयां।।
दिस्से भैणा ऐ तां सानूं रब्बी तस्वीर नी, लख ... ...

माता राधे मुखड़े नू चुम– चुम रजदी।
पण्डितां ते ज्योतिषियां वले जावे भजदी।।
सारे मिल आखन लगे पीरां दा पीर नी, लख ... ...

बाली उमर विच खेड़ां ए खेड़े ।
सदक़े मैं जावां जेहड़े ओदों तेरे जेड़े।।
गति कौन जाने ए तां शाही फ़क़ीर नी,लख ... ...

" दासनदास "भला यश क्या गावे ।
शेष हज़ार मुख अंत न पावे।।
लिखां अत्ते गावां मैं की, मैं हां हक़ीर नी , लख ... ...

तर्ज़–ज़िंदगी तां तेरी बंदे ... ...

झूले विच झूले सोहणा भावां दा वीर जी ।
मेरा ए सत्गुरु प्यारा पीरां दा पीर जी।। टेक।।

खुशियाँ मनावने नूं बदली बहार जी,
टेरी विच होया सत्गुरु संत अवतार जी ।
जुल्म पठानां वाली मेटी लकीर जी, झूले ... ...

किसनूं सुनावां इस झूले दा हाल जी ,
झूले विच बैठा मेरा दीन दयाल जी।
इसनूं तां दुनियां आखे संत फ़क़ीर जी,झूले ... ...

इस झूले दी सुंदर डोरी ,
झूले विच बैठा मोहन करदा चोरी।
दिल ताईं मारे सईयो प्रेम दे तीर जी, झूले ... ...

टेरी तों चलके झूला नंगली च आया ,
इस झूले नूं माता राधे झुलाया।
हत्थां विच खेले जिसदे मेरी जागीर जी , झूले ... ...

पत्थर दिलां नू सत्गुरु मोम बनाया ,
जो दर आया सो इसदा कहलाया ।
वचनां दे इसदे भारी जादू तासीर जी ,झूले ... ...

क्या गुण गावे जीभा बेचारी ,
नेति– नेति कह वेद पुकारी।
चरणां विच रख लो मैं हां ' दास' हक़ीर जी ,झूले ... ...